संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक-240 सोमवार,01 जुलाई 2024, पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

खुला पत्र

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग से संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

» क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी?

» क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी?

» देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?

» क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?

» क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

कलम बंद...

कलम बंद...

संपादकीय

शेख हसीना का आना कई मायनों में सुकूनकारी

भारत में नई सरकार के गठन के बाद भारत की द्विपक्षीय राजकीय यात्रा पर बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना आना कई मायनों में सुकूनकारी है। उनकी यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के दरम्यान के घनिष्ठ संबंधों को और आगे बढाना है। दोनों देशों ने समुद्र क्षेत्र समेत कई अन्य अहम क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ावा देने के लिए दस समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसमें डिजिटल क्षेत्र में संबंध प्रगाढ़ करने व हरित साझेदारी के साथ समुद्र विज्ञान, स्वास्थ्य व चिकित्सा, आपदा प्रबंधन व मत्स्य पालन भी इसमें शामिल है।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा नए क्षेत्रों में सहयोग के वास्ते भविष्य के लिए एक दृष्टिकोण तैयार किया है,जिससे दोनों देशों के युवाओं को लाभ मिलेगा। हसीना ने भारत को विसनीय मित्र बताते हुए 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता में भारत सरकार व भारतीयों के योगदान को याद किया। भारत की पड़ोसी पहले की नीति के तहत बांग्लादेश महत्त्वपूर्ण भागीदार है। दोनों देश जल्द नई रेल सेवा व बस सेवा भी चालू करने पर सहमत हैं। पंद्रह दिनों के भीतर हसीना का यह दूसरा भारत दौरा है।कहा जा रहा है,इस करीबी से चीनी सरकार चिंतित हो सकती है। हालांकि बांग्लादेश के चीन के साथ भी अच्छे संबंध हैं। वह कच्चे माल के मामले में उसका प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। इसके बाद हसीना चीन भी जा रही हैं, परंतु भारत ने भी पिछले आठ वर्षों में बांग्लादेश के बुनियादी ढांचे के विस्तार में मदद के लिए आठ मिलियन डॉलर का कर्ज दिया है। 2022-23 के दौरान दोनों देशों के दरम्यान 15.9 बिलियन डॉलर का व्यापार हुआ, जिसके मौजूदा वर्ष में तीव्र गति से बढने की उम्मीद है।गौर करने वाली बात है कि बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा डेवलपमेंट पार्टनर भी है। हालांकि दोनों ही देश जलवायु परिवर्तन के बदलावों के चलते जनसांख्यकीय व आर्थिक उथल-पुथल झेल रहे हैं। और ये मसले वाकई दोनों ही देशों के लिए परेशानी का सबब हैं। इस समझौते को विकसित भारत 2047 व स्मार्ट बांग्लादेश 2041 के व्यापक दृष्टिकोण से देखा जा रहा है।बांग्लादेशी नौजवानों के लिए भारत सिर्फ बेहतरीन जीवन व रोजगार की स्वप्नगाह भर नहीं है। बल्कि एक छोटे से देश का सामर्थ्यवान हमसाया होने का फर्ज निभा कर भारत अपना बड़प्पन भी बखूबी दर्शा रहा है। साथ ही वह प्रमुख एशियाई देश होने का गौरव भी प्राप्त करते हुए दुश्मनी साधने वाले पाकिस्तान को आईना भी दिखा सकता है।

डॉक्टर्स दिवस: विश्वास,सुरक्षा और जीवन

केशी गुप्ता
द्वारका
नई दिल्ली

जीवन परमात्मा का दिया हुआ अमूल्य है। जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए शरीर तथा शरीर से संबंधित सभी ऑर्गन्स का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है। समय परिवर्तन के साथ विज्ञान ने बहुत तरक्की की और मानव की जिंदगी को बीमारियों ऑर्गन फेलियर से बचाने के लिए कई तरह की दवाईयों ,सर्जरी,ऑर्गन ट्रांसप्लाट इत्यादि की खोज कर डाली । डॉक्टर्स का पेशा बहुत ही नोबल माना जाता है। एक और जहां ईश्वर को जीवन दाता माना जाता है दूसरी ओर धरती पर मां बाप के बाद डॉक्टर्स को वो दर्जा दिया जाता है । किसी भी घर मे जब कोई सदस्य बीमार पड़ जाता है तो समस्त परिवार के सदस्य परेशान हो जाते हैं और ऐसे में वो डॉक्टर के पास बीमार व्यक्ति के पूर्ण रूप से स्वस्थ होने की उम्मीद ले कर पहुंचते हैं। उस समय वो डॉक्टर ही उनके लिए भगवान का दर्जा रखता है । आधुनिक समय मे इंसान की जिंदगी एक मशीन की तरह हो गई है । खान पान से ले कर ,दिन रात की बदलती रूटीन ने बहुत सी नई बीमारियों को जन्म दिया है । मानव के जीवन से जोड़ा हर काम अब मशीनों द्वारा होने लगा है । संसार डिजिटलाइजेशन की ओर अग्रसर है । इस आधुनिकता और मशीनीकरण ने मानव को शारीरिक मानसिक रुप से अत्यधिक प्रभावित किया है । आज आधुनिक समय में कोई भी काम मैंवल ना होने की वजह से मानव का दिमाग और अन्य अंग पूर्णता स्वस्थ्य नही रहे। बड़ी बड़ी बीमारियों ने विकराल रूप ले लिया है । हर इंसान दवाईयों के सेवन के लिए मजबूर है । ये कहना गलत नही होगा की दवाईयां मानव की रोजमर्रा की डाइट का एक हिस्सा बन चुकी है । दूसरी तरफ मेडिकल /चिकित्सा क्षेत्र एक इंडस्ट्री का रुप ले चुका है । पैसे की होड़ का एक हिस्सा । जिस वजह से आम आदमी का डॉक्टर्स और हॉस्पिटल्स से विश्वास समाप्त होता नजर आता है । इसी कारण वंश बीमार के घर वाले बीमार के स्वस्थ न होने के वजह या उसे खोने के वजह से अपना आपा खो बैठे है तथा डॉक्टर और हॉस्पिटल स्टाफ को उसका जिमेवार ठहराते हैं। आज के समय में जनसंख्या इतनी अधिक बड़ चुकी है कि जितने भी अस्पताल और स्टाफ की वयवस्था की जाती है वो कम ही पढ़ती है। कोरोना महामारी के बाद से बीमारियों ने और विकराल रूप ले लिया है । उस समय की यादों ने मानव के विश्वास को तोड़ दिया है । 1 जुलाई विश्व भर में डॉक्टर्स दिवस के रूप में मनाया जाता है। जो ना सिर्फ डॉक्टर्स के नोबल प्रोफेशन को सैल्यूट देने का काम करता है अपितू डॉक्टर्स को अपने प्रोफेशन की तरफा ईमानदारी तथा उस शपथ को ताजा रखने का काम भी करता है जो इस पेशे से जोड़ी है। आज आधुनिक समय मे जब मानव जीरो टॉलरेंस का शिकार है , ऐसे में डॉक्टर्स भी स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करते है । जिस वजह से डॉक्टर्स एसोसिएशन द्वारा डॉक्टर्स सुरक्षा बिल की मांग की जा रही है। समय समय पर ऐसी घटनाएं सामने आती रहती है जहां बीमार के घरवालों द्वारा डॉक्टर्स के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है । जो पूर्णतया गलत है । डॉक्टर भी एक इंसान ही होता है और अपने प्रोफेशन को समर्पित डॉक्टर कभी नही चाहता की उसका केस बिगड़ जाए । वो अपने कर्त्तव्य को ले कर सजग होता है और अंत तक मरीज को बचाने का प्रयास करता है । मरीज को बचाने का प्रयास उसके हाथ में जरूर है मगर जिंदगी की जितनी सांसे इंसान की लिखी होती है वो उतनी ही ले पता है ।

सरकार किसी भी पार्टी की हो विधायक मंत्री कोई भी रहे पर कमियां लिखना या प्रकाशित करना लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के लिए बड़ी चुनौती रहेगी

» **अखबार में ना छपे कमियां क्या इस वजह से मंत्री जी ने अखबार का रुकवाया शासकीय विज्ञापन?**

» **मंत्री जी अपनी कमियों को दूर करने के बजाए लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को दबाने का क्यों कर रहे प्रयास?**

» **क्या शासकीय विज्ञापन बिना अखबार नहीं चलेगा मंत्री जी...क्या यही सोच चुके है मंत्री?**

» **बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां भी सुभान अल्लाह कुछ ऐसा ही है कांग्रेस-बीजेपी का हाल...आलोचना पचाने में दोनों असमर्थ...**

» **कलेक्टर नाराज,एसपी नाराज और नाराज विधायक मंत्री...नाराजगी की वजह सिर्फ अपनी कमियों को ना पचा पाना...**

» **उच्च अधिकारियों के कान भरने में निचले स्तर के कर्मचारी क्यों होते हैं माहिर?**

» **क्या उच्च अधिकारी सही और गलत में फर्क नहीं कर पाते..जिस वजह से निचले स्तर के कर्मचारी उनके कान भरने में सफल हो जाते हैं?**

राजनीति के बदलते परिवेश में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का स्थान खत्म होता दिख रहा,इसकी वजह सिर्फ है सत्ता का दुरुपयोग,आजादी से लेकर आज तक कई बार सत्ता परिवर्तन देखने को मिला, जिसमें लोकतंत्र के चौथे स्तंभ जो की पत्रकारिता है जिसकी की भूमिका अहम रही, पत्रकारिता का उद्देश्य हमेशा ही लोकतंत्र को संतुलित करने का होता रहा है, यही वजह थी कि पत्रकारिता में सिर्फ कमियों का प्रकाशन हुआ करता था ना कि पत्रकार कोई कार्यवाही करता था, लेकिन पत्रकार के बताए गए कमियों पर संज्ञान जरूर लिया जाता था,पर आज के परिवेश में कमियों को दिखाने वाले पत्रकारों व संपादकों की खैर नहीं,कमी दिखाने पर कभी कलेक्टर नाराज तो एसपी नाराज और तो कभी नाराज सत्ता दल के विधायक मंत्री है और वजह सिर्फ उनकी कमियों को खबरों के माध्यम से उनके सामने रखने मात्र से पत्रकार संपादक व अखबार के प्रति उनकी नाराजगी और द्वेष की भावना पनप रही है, इसके पीछे की एक मुख्य वजह यह भी है इनका कच्चे आँख कान का होना, क्योंकि यह आँख कान के कितने कच्चे हो चुके हैं कि इन्हें इनकी कमियां दिखाने व बताने पर इनके लोग ही उन्हें उनकी कमियां देखने नहीं देते, उन्हें सिर्फ पत्रकारों के प्रति भड़काते हैं और उन्हें यह बताते हैं कि आप तो कुछ भी कर सकते हैं, आप पत्रकार पर अपराध भी पंजीकृत करा सकते हैं, पत्रकार को जेल भी भेज सकते हैं, आर्थिक नुकसान के लिए अखबार का सरकारी विज्ञापन रोक सकते है सब कुछ आपके हाथ में है, आप क्यों यह सब नहीं करते। कुछ ऐसा ही प्रचलन इस समय देखने को और सुनने को मिल रहा है, सरकार किसी भी पार्टी की बने उदाहरण के तौर पर कई है जो किसी से छुपा नहीं है। कमियों को ना तो बड़े अधिकारी पचा पा रहे हैं और ना ही सत्ता पक्ष के विधायक व मंत्री बचा पा रहे हैं और कमी में सुधार लाने के बजाए कमियों का पहाड़ खड़ा कर रहे हैं जो कहीं ना कहीं इन्हें आगामी चुनाव में नुकसान ही पहुंचाएगा साथ की बीते लोकसाभ में इसका नुकसान देखने को भी मिला और आगे भी नुकसान तो सिर्फ जनप्रतिनिधियों का होगा अधिकारियों के तो दोनों हाथों में लड्डू है। ब्यूरोक्रेसी में शासन भी जनप्रतिनिधियों का गुलाम बना हुआ है जनप्रतिनिधि जैसा कहेंगे प्रशासन शासन व्यवस्था वैसा चलेगा सही गलत का फैसला लेने का अधिकार उनके पास भी नहीं रहा? सारे अधिकार निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के हाथ में आ गया है यही वजह है कि उनके मनमानी जनता का आशीर्वाद

मिलते ही बढ़ जाती है,जनता भी मतदान के समय अपना महत्वपूर्ण मत देकर एक मजबूत लोकतंत्र की कल्पना करती है पर वह मजबूत लोकतंत्र जनता के लिए 5 साल के लिए सबक बन जाता है, इस समय हम मौजूदा भाजपा की बनी छत्तीसगढ़ सरकार की बात कर रहे हैं जिसके मंत्री उनकी कमियों की खबर प्रकाशित होने से घबरा गए और घबराहट में अखबार पर दबाव बनाने का एक नया तरीका निकाल लिया वह तरीका है शासकीय विज्ञापन रोककर आर्थिक क्षति देने का, लगातार एक मंत्री जी की खबर उनकी कमियों के प्रकाशित हो रही जिसके बाद मंत्री जी के मौखिक आदेश पर तुगलकी फरमान जारी हो गया वह फरमान था जनसंपर्क विभाग के संचनालय आयुक्त का वह भी मौखिक जिसमें दैनिक घटती-घटना का बिना कोई नोटिस जारी किए शासकीय विज्ञापन रोका गया ताकि कर्मियों की खबर प्रकाशित न हो सके या फिर ना की जाए? इसके विरूद्ध कलमबंद अभियान की शुरू आत हो रही है, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग के संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान की शुरुआत होगी जो लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के लिए काला दिवस जैसा होगा है?

क्या चौथे स्तंभ की जरूरत ही नहीं है?

ये बात बिल्कुल सही है कि मीडिया देश की ज़रुरत है, बिना इसके हम स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना नहीं कर सकते हैं,

कमी दिखाने पर पत्रकार प्रशासनिक अधिकारियों को दुश्मन क्यों हो जाते हैं?

आजकल शासन प्रशासन की कमियां दिखाने वाले समाचार प्रकाशित करना बड़ा मुस्किल हो गया है। कमियां यदि प्रकाशित हुई तो अधिकारी उससे सिख लेने उन्हे दूर करने की बजाए पत्रकार को दुश्मन मान बैठते हैं और वह फिर पत्रकार को ठिकाने लगाने की जुगत में लग जाते हैं। कुल मिलाकर जिन अधिकारियों को लोगों के हित संवर्धन के लिए भेजा गया है वही लोगों के हित संबंधी मामलों में खबर प्रकाशित होते ही नाराज हो जाते है और हितों के संवर्धन की बजाए कमियों को दूर करने की बजाए वह पत्रकार से दुश्मनी भुनाने की जुगत लगाते हैं जिसमे वह सफल भी होते हैं।

संपादक,मालिक और पत्रकार,सभी एक ढर्रे पर चल रहे हैं,सभी बदलाव की बात करते हैं,मगर कोई बदलना ही नहीं चाहता है, देश का स्वघोषित चौथा स्तंभ डगमगा रहा है,अपने विचारों से, अपने कर्तव्यों से बचा लोज्अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है यह कहना गलत नहीं होगा क्योंकि पहले के तीन स्तंभ भी चौथे स्तंभ के लिए गंभीर नहीं है। उन्हें लगता है कि चौथे स्तंभ की जरूरत ही नहीं है? हम सब इस देश के आम नागरिक हैं मैंने कभी सोचा नहीं था कि मेरी पत्रकारिता क्षेत्र में कभी रुचि होगी पर अचानक समय के साथ रुचि बढ़ी और लोगों के लिए उनकी आवाज बनना अच्छा लगने लगा पर नहीं पता था कि उनकी आवाज बनना खुद के लिए कठिन हो जाएगा,आवाज भले ही हम दूसरे की बन रहे हैं पर समस्या खुद के लिए खड़ी हो रही है? क्योंकि जिनके लिए आवाज बन रहा हूं वह उस आवाज को बचाने के लिए प्रयत्न नहीं कर रहे हैं, पत्रकारिता की कोई पढ़ाई नहीं की पर काम करते-करते अनुभव होता गया, पत्रकारिता क्या है उसका उद्देश्य क्या है यह काम करते-करते ही समझ आया और यह भी समझ आया की चौथे स्तंभ की जरूरत ही नहीं है? और यह भी समझ आया की पत्रकारिता करना कठिन है।

समाज में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है, वह जनता और सरकार के बीच एक पुलिया का काम करती है, इस कारण मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है, समाज में मीडिया की भूमिका पर बात करने से पहले हमें यह जानना चाहिए कि मीडिया क्या है? मीडिया हमारे चारों ओर मौजूद है, जो टी.वी. शो हम देखते हैं, संगीत जो हम रेडियो पर सुनते हैं, पत्र एवं पत्रिकाएं जो हम रोज पढ़ते हैं,यह हमारे चारों ओर यह मौजूद होता है,तो निश्चित सी बात है इसका प्रभाव भी समाज के ऊपर पड़ेगा ही, लोकतंत्र के चार स्तंभ विधायिका, कार्यपालिका,न्यायपालिका और पत्रकारिता हैं, स्वाभाविक-सी बात है कि जिस सिंहासन के चार पायों में से एक भी पाया ख़राब हो जाये, तो वह अपनी आन-बान-शान गंवा देता है, मीडिया की महत्ता को समझाते हुए अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थॉमस जेफरसन ने कहा था, यदि मुझे कभी यह निश्चित करने के लिए कहा गया कि अख़बार और सरकार में से किसी एक को चुनना है, तो मैं बिना हिचक यही कहूंगा कि सरकार चाहे न हो, लेकिन अख़बारों का अस्तित्व अवश्य रहे।

कर्मियों की खबर ना छपी तो क्या छापे?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी? क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री ती? क्यां छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी? देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार? क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

क्या समाचार पत्र राजनीतिज्ञों और अन्य सत्ताधारियों का सशक्त उपकरण बन गया है?

जिस सिंहासन के चार पायों में से एक भी पाया ख़राब हो जाये,तो वह अपनी आन-बान-शान गंवा देता है

140 करोड़ की आबादी होने के कारण देश में कई समस्याएं हैं, जो कुंडली मार कर बैठी हुई हैं, इन सबसे निपटने के लिए सरकार प्रयास कर रही होगी, हम एक लोकतांत्रिक देश में रह रहे हैं, जहां हम अपनी पसंद की सरकार चुनते हैं, सरकार कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका की मदद से जनता के बीच में काम करती है, इन्हें देश का आधारभूत खंभा भी कहते हैं, हालांकि,

निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए मनमाना प्रयोग...सभी अपने अधिकारों की सीमा लांघते हैं क्यों?

हमने व हमारे अतीत ने इस बात को सच होते भी देखा है, याद किजिए वो दिन जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, तब अंग्रेजी हुकूमत के पांव उखाड़ने के लिए एकमात्र साधन अख़बार ही था, विश्व में अमेरिका और कई पश्चिमी देश ऐसे हैं, जहां पत्रकारिता स्वतंत्र है, भारत में भी प्रेस की अपनी भूमिका निभा रही है, हालांकि, अन्य देशों की अपेक्षा हमारे देश में प्रेस के लिए कोई अलग से कानून नहीं हैं, हिन्दुस्तान में एक आम नागरिक को जो अधिकार दिया गया है, वही अधिकार प्रेस को भी दिया गया है, आर्टिकल 19 (1) (ए) के अनुसार, हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति का अधिकार दिया गया है, मीडिया को भी इसी दायरे में रखा गया है, हम आज जिस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं, वो सरकार और मीडिया है, सरकार के बिना मीडिया अधूरी है, और मीडिया के बिना सरकार, देश की समस्याओं को अख़बार या टीवी के माध्यम से मीडिया सरकार तक अपनी बात पहुंचाती है, देखा जाए, तो प्रेस की भूमिका जनप्रतिनिधि की होती है, कई बार ये प्रतिनिधि सीमा को लांघ जाते हैं, नाजी नेताओं ने ठीक ही कहा है कि यदि झूठ को दस या बीस बार बोला जाए, तो वह सच बन जाता है, समाचार पत्रों के संदर्भ में यह कथन सही उतरता है, आज समाचार पत्र राजनीतिज्ञों और अन्य सत्ताधारियों का सशक्त उपकरण बन गया है, वे अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए उनका मनमाना प्रयोग करते हैं, सभी अपने अधिकारों की सीमा लांघते हैं मगर क्यों?

मीडिया का काम एक निगरानीकर्ता की तरह होता है

देश में सभी परियोजनाओं को जनता तक पहुंचाने का काम कार्यपालिका का होता है, विधायिका का काम जनता के लिए उन योजनाओं का बनाना होता है, देश में कानून-व्यवस्था और एक स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण के लिए न्यायपालिका की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, मीडिया का काम एक निगरानी की तरह होता है, कहीं भी गड़बड़ी होती है, उसे तुरंत प्रकाश में लाता है मिडिया, कभी-कभी न्यायपालिका भी सरकार के कामों पर कमेंट या सवाल उठाती है, जिसे न्यायिक सक्रियता कहते हैं, विधायिका और कार्यपालिका तो एक-दूसरे के पूरक होते ही हैं,मीडिया और सरकार के बीच के रिश्ते हमेशा अच्छे नहीं हो सकते, क्योंकि मीडिया का काम ही है सरकारी कामकाज पर नज़र रखना, लेकिन वह सरकार को लोगों की समस्याओं, उनकी भावनाओं और उनकी मांगों से भी अवगत कराने का काम करता है और यह मौक़ा उपलब्ध कराता है कि सरकार जनभावनाओं के अनुरूप काम करे!

किसी ने शायद ठीक ही कहा है जब तोप मुकाबिल हो,तो अखबार निकालो...आज के समय में अखबार निकालने वालों को तोप से उड़ाने के प्रयास से भी गुरेज नहीं

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

कभी अकबर इलाहाबादी ने कहा था की जब तोप मुकाबिल हो अखबार निकालो यह उन्होंने अखबार की ताकत बताने की लिए कहा था लेकिन आज अखबार निकालने वालों को तोप से उड़ाने से भी गुरेज नहीं किया जाता है। सच से इतना परहेज हो गया है की सच प्रकाशन के बाद पत्रकारों के प्रति अपराध बढ़ता जा रहा है अनैतिक अवैध कार्यो को लेकर प्रकाशन करने पर धमकियां मिलती हैं षड्यंत्र जान से मारने के रचे जाते हैं कुल मिलाकर आज व्यवस्था ऐसी है की लोकतंत्र के अन्य स्तंभ भी चौथे के खिलाफ हैं और उसे नेस्तनाबूत करने में लगे हुए हैं।

पत्रकारों के प्रति खबर प्रकाशन के बाद अधिकारियों का विचार बदला लेने का क्यों होता है?

आजकल प्रायः देखा जाता है की किसी भी ऐसी खबर जो शासन प्रशासन को सचेत करने के उद्देश्य से जुड़ी हुई होती है के प्रकाशन के बाद अधिकारियों का विचार पत्रकार से बदला लेने की तरफ आकर्षित होता है जबकि अधिकारी कमियों को दूर कर खबर को बेअसर कर सकते हैं, लेकिन अधिकारी आजकल ऐसा नहीं करते है और पत्रकार से द्वेष रखते हुए उससे बदला लेने का अवसर तलाशने लगते हैं। वैसे पत्रकारों के खिलाफ अधिकारियों को कोई भी कानून कार्यवाही करना भी आसान है, क्योंकि पूरी व्यवस्था का ही वह संचालन करते हैं, जिसमे कानून व्यवस्था भी शामिल है और वह जब चाहे जैसे चाहे पत्रकार को कानूनी दांव पेंच में उलझा देते हैं और बदला लेकर ही मानते हैं।

पत्रकार कभी भी अपने लिए खबर नहीं लिखते

खबरों का प्रकाशन पत्रकार कभी अपने लिए नहीं करते। पत्रकार समाज में व्यवस्था में घट रही घटनाओं को सभी के समाने लाने के लिए ही खबर प्रकाशित करते हैं। खबरों में पत्रकार अपने लिए अपने लाभ के लिए कुछ भी प्रकाशित नहीं करता है। व्यवस्था में सुधार की कैसी जरूरत है और क्या गलत समाज में घट रहा है व्यवस्था में घट रहा है यही खबर प्रकाशन में मुख्य होता है।

मतदाताओं ने मोदी को बदलने का मैसेज दिया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीसरी शपथ को बीस दिन हो गए है। केबिनेट, संसद की बैठक, स्पीकर चुनाव और राष्ट्रपति का अभिभाषण सब हो गया है। तो सोचे, क्या आपको कोई एक भी क्षण, एक भी घटना, एक भी चेहरा,एक भी जुमला और एक भी ऐसा परिवर्तन दिखलाई दिया जिससे लगा मानों ताजा हवा का झौका हो। क्या केबिनेट में कुछ नया, ताजा दिखा? क्या प्रधानमंत्री दफ्तर, सरकार की आला नौकरशाही में कोई परिवर्तन झलका? ऐसी कोई नई प्राथमिकता,नया मुद्दा,नया विषय प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति के मुंह से निकला जिससे लगे कि जिन बातों (रोजगार, महंगाई, बेहाल जिंदगी,नौजवान आबादी,किसान,मजदूर,मध्यवर्ग आदि) पर मतदाताओं ने मोदी के चार सौ पार के नारे को नकारा, तो उससे सबक सीख कर जिंदगी के रियल मसलों पर मोदी 3-0में नया कुछ बनने की संभावना है?इस बात को इस तरह भी रख सकते है कि मतदाताओं ने नरेंद्र मोदी को बदलने का मैसेज दिया, विपक्ष में दम भरा तो शासन और राजनीति में आम रायसे, सबसे सलाह करके, सबसे पूछ कर निर्णय का नया सिलसिला बनना चाहिए था या नहीं? उस नाते क्या नरेंद्र मोदी को अपने को रिइंवेंट नहीं करना था? भाषण कम करके, विपक्ष से पंगा कम ले और सर्वानुमति बना कर राज करने का नया अंदाज। मैं, मैं भगवान, मैं महान की बजाय हम, एनडीए, भाजपा और पक्ष-विपक्ष सब एक ही देश के अंशधारी है, यह सोचते हुए सबका साझा,सबका साथ, और सबके विकास की जुमलेबाजी को नई तरह से गढ़ा जाना चाहिए था। मतलब प्रधानमंत्री खुद ही विपक्ष से बात करके, विपक्षी नेताओं को बुलाकर आम राय से ऐसा स्पीकर बनाते जिससे संसद की आभा बढ़ती। बुद्धी, मेघा, अंग्रेजी-हिंदी की भाषागत प्रवीणताओं और व्यवहार से वैश्विक जमात, मंच और संगठनों में भारत की उपस्थिति मौजूदगी हो तो दुनिया को लगे कि सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का स्पीकर कैसा भव्य व्यक्तित्व लिए हुए है।क्या आपको लगता है ऐसी कोई भी चिंता या दिल-दिमाग में सोच का परिवर्तन नरेंद्र मोदी3:0 में आया है? असलियत में बीस दिनों में नरेंद्र मोदी ने हर वास्तनिकता से मुंह चुराया है।

चुनाव नतीजों के बाद नरेंद्र मोदी ने न तो भाजपा के पदाधिकारियों से सीधे-सीधे बात की और न भाजपा संसदीय दल की बैठक बुला कर उसमें नतीजों और नए नेता के चुनाव पर विचार किया। न ही संघ परिवार के पदाधिकारियों को बुला कर उनके साथ विचार, सलाह और परस्पर विश्वास बनाने जैसी कोई पहल की।

-हरिशंकर व्यास-

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

CMYK

खुला पत्र

कौन सी खबर प्रकाशित करें स्वास्थ्य मंत्री जी ? क्या प्रकशित करें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी ?

आपको जो कमियां दिखाई जा रही हैं वह आपको पसंद नहीं आ रही हैं... आपके विभाग में कितनी कमियां हैं यह शायद आपको दिख नहीं रहा...और अखबार आपको दिखाना चाह रहा है वह देखना नहीं चाहते...ऐसे में क्या प्रकाशित करें यह आप ही तय करें? अखबार जो आपको कमियां दिख रहा है उस कमियों को आपको दूर करना था...पर उसे कमियों को दूर करने के बजाय आप अखबार से पत्रकार से संपादक से आपको दिक्कत हो रही फिर आप यह समझिए कि आपसे जनता को कितनी दिक्कतें हो रही होंगी?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

- » क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी ?
- » क्यां छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी ?
- » देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध ?
- » क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार ?
- » क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी ?

कलम बंद...

कलम बंद...

घटती घटना | अम्बिकापुर, शनिवार 02 मार्च 2024 | 5

विष्णु सरकार के स्वास्थ्य मंत्री ने क्या कांग्रेसी युवा को सौंप दी शासकीय आवास की जिम्मेदारी ?

जिस युवक के सोशल मीडिया पोस्ट में दिखती है संघ और भाजपा के खिलाफ विचारधारा उसी युवक को क्यों सर पर बैठा रखे हैं स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी ?

घटती घटना | अम्बिकापुर, मंगलवार 05 मार्च 2024 | 6

क्या खुद के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी के प्रमाण-पत्रों की जांच करा पाएंगे स्वास्थ्य मंत्री ?

घटती घटना | अम्बिकापुर, गुरुवार 07 जून 2024 | 5

क्या भाजपा कोरबा की लोकसभा प्रत्याशी कोरिया एमसीबी जिले के विधायक मंत्री व संगठन के चक्रव्यूह में फंसकर हार गई ?

घटती घटना | अम्बिकापुर, सोमवार 10 जून 2024 | 5

जिला चिकित्सालय में इंसानों के अस्पताल में विचरण कर रहे मवेशी

क्या यही है प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था का हाल ?

खुला पत्र

देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?

माननीय मुख्यमंत्री से भी सवाल है छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार है केंद्र में भी आपकी पार्टी की सरकार है पर छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमियां दिखाने से रोकने का भी प्रयास हो रहा है यह प्रयास कहीं ना कहीं स्वस्थ लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास है। जहां पर भाजपा सरकार से लोगों को बेहतर करने की उम्मीद होती है तो वहीं पर छत्तीसगढ़ में नवनिर्वाचित मंत्री विधायक बे-लगाम हो चुके हैं उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है उसे जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ दिख रहे हैं उनकी कमियों को बताना उन्हें रास नहीं आ रहा इसलिए वह पत्रकार,संपादक का कलम बंद करने का प्रयास कर रहे हैं अब इस पर आप ही संज्ञान ले...की संपादक व पत्रकार कौन सी खबर प्रकाशित करें?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

- » क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी?
- » क्यां छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी?
- » देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?
- » क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?
- » क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

कलम बंद...

कलम बंद...

घटती घटना | अम्बिकापुर, शुक्रवार 27 जून 2024 | 5

स्वास्थ्य मंत्री का छः महीने का कार्यकाल रहा निराशाजनक

क्या बचा पाएंगे मंत्री पद?

घटती घटना | अम्बिकापुर, शुक्रवार 28 जून 2024 | 5

क्या स्वास्थ्य मंत्री की कुर्सी जाएगी या आरएसएस के होने का मिलेगा फायदा?

पक्षपात...एक शिकायत पर तत्काल हुई जांच और कार्यवाही...सीएमएचओ और पूर्व प्रभारी डीपीएम की शिकायत के विरुद्ध ना जांच ना ही कोई कार्यवाही?

ना अपील,ना दलील,सीधे चिकित्सक को कर दिया निलंबित

स्वास्थ्य मंत्री के राज में यह कैसा बवाल?

खुला पत्र

क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?

भ्रष्टाचार की खबरों से दिक्कत...कमी दिखाओ तो दिक्कत...जनता की परेशानियों को दिखाओ तो दिक्कत... आखिर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ करें तो क्या करें? सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने पत्रकार दौड़ रहा, पर पत्रकार की दौड़ के पीछे निर्वाचित जनप्रतिनिधि उसकी दौड़ की गति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं...भ्रष्टाचार बढ़ता रहे पर पत्रकार ना दिखाएं... क्या यही चाहता है जनप्रतिनिधि या फिर सरकारी तंत्र!

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

- क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी ?
- क्यां छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी?
- देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?
- क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?
- क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

कलम बंद...

कलम बंद...

खुला पत्र

भारत में सच्चे पत्रकार को राजनीतिक पार्टियों से खतरा क्यों रहता है?

भारत अपने पत्रकारों को निडर होकर काम करने का स्वतंत्र तरीका प्रदान करने में बहुत पीछे है। इन दिनों,कुछ को छोड़कर,हर दूसरा पत्रकार वही खबर दे रहा है जो सरकार की प्रशंसा करती है। नए चैनल लोगों को सरकार द्वारा की गई गलती से विचलित करने के लिए विभिन्न विषयों पर अनावश्यक बहस दिखाएंगे। इसके कारण अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो किसी का ध्यान नहीं जाता है। दूसरा कारण यह है कि पत्रकार अपने सिद्धांतों और मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि आज की स्थिति ऐसी है कि स्थापना के खिलाफ विषयों पर बोलने या लिखने वाले पत्रकारों को धमकी देना,गाली देना और मारना कई अन्य देशों की तरह भारत में भी एक वास्तविकता बन गई है। देश और दुनिया को डरा दिया है। वहीं, पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमलों की घटनाओं ने एक बार फिर उन्हें सुर्खियों में ला दिया है। जो पत्रकार देश और उसके नागरिकों के लिए जीना चुना वह मरेंगे या सरकारी तंत्रों के द्वारा प्रताड़ित होंगे...

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

- » क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी ?
- » क्यां छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी?
- » देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?
- » क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?
- » क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

कलम बंद...

कलम बंद...

कलम बंद...

कलम बंद...

संक्षिप्त खेल समाचार

डेनमार्क को हराकर जर्मनी क्वॉर्टर फाइनल में पहुंचा

बर्लिन,30 जून 2024। आठ साल में पहली बार जर्मनी ने यूरो 2024 में क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई,जब काई हैवर्टज़ और जमाल मुसियाला के गोल ने मेजबान को डॉर्टमुंड के सिग्नल इडुना पार्क में अंतिम 16 में डेनमार्क पर 2-0 से जीत दिलाई। जर्मनी ने शुरुआती सीटी से ही बागडोर संभाली और सोचा कि उन्होंने सिर्फ़ चार मिनट में ही स्कोरिंग खोल दी है,लेकिन निको श्लोटरबेक के ओपनर को पहले से तय बेईमानी के कारण बाहर कर दिया गया।डेनमार्क के गोलकीपर कैस्पर श्माइचेल के हाथों में बहुत काम था,उन्होंने जोशुआ किमिच और हैवर्टज़ के खतरनाक प्रयासों को विफल कर दिया, जबकि जर्मनी ओपनर के लिए दबाव बना रहा था, सिन्हुआ की रिपोर्ट। खेल का प्रवाह बाधित हो गया क्योंकि आधे घंटे के निशान पर खराब मौसम के कारण मैच स्थगित कर दिया गया। फिर से शुरू होने के बाद, जर्मनी को स्कोरिंग खोलनी चाहिए थी,लेकिन हैवर्टज़ हेडर से श्माइचेल को नहीं हरा सके,जबकि श्लोटरबेक ने साइड नेटिंग में हेडर मारा। डेनमार्क ने पहले हाफ के अंतिम समय में जान दिखाई, लेकिन रासमस होजलंड जवाबी हमले के बाद जर्मनी के गोलकीपर मैनुअल नेउर को मात नहीं दे सके।

हाफ टाइम के बाद,डेनमार्क के जोआचिम एंडरसन का गोल थॉमस डेलाने की ऑफसाइड पोजीशन के कारण रद्द कर दिया गया। एंडरसन ने बॉक्स के अंदर अपने हैंडबॉल से जर्मनी को पेनल्टी दिलाई, जिससे वह खेल में उलझे रहे। हैवर्ट ने आगे बढ़कर पेनल्टी को गोल में बदला और 53वें मिनट में गतिरोध को तोड़ा।हैवर्ट के पास दो पल बाद गोल करने का मौका था,लेकिन आर्सेनल के स्ट्राइकर वन-ऑन-वन के बाद श्माइचेल को नहीं हरा सके। डेनमार्क ने शुरुआत की और आगे बढ़ा, लेकिन इसके बावजूद नेउर 66वें मिनट में होजलंड के गोल के बराबर थे।

तेरी जीत मेरी जीत,तेरी हार मेरी हार,ऐसा अपना प्यार...

जीत के बाद कुछ इसी तरह से रोहित और विराट ने टी 20 क्रिकेट से लिया संन्यास

नयी दिल्ली,30 जून 2024। जीत के जश्न में गले मिलते, हार के दुख में एक दूसरे के आंसू पोछते , क्रीज पर एक दूसरे की उपलब्धि को सराहते विराट कोहली और रोहित शर्मा फिल्म 'शोले' के जय और वीरू की तरह हमेशा एक दूसरे के साथ खड़े नजर आये और अब दोनों ने टी 20 क्रिकेट से विदा भी साथ में ली। जीत के बाद कंधे पर तिरंगा लपेटे या एक दूसरे के गले लगकर रोते दोनों की तस्वीरें 140 करोड़ भारतीयों के दिल में घर कर गई। दोनों की शख्सियत में कोई समानता नहीं। एक आग है तो दूसरा पानी।

जीतते ही विराट-रोहित का संन्यास

गौतम गंभीर ने विराट कोहली और रोहित शर्मा को विश्व कप जीतते ही टी-20 अंतरराष्ट्रीय से संन्यास लेने के लिए बधाई देते हुए कहा कि यह पहले से लिखी स्क्रिप्ट से बेहतर था। कोहली और रोहित दोनों ने भारत की टी-20 विश्व कप जीत में अहम भूमिका निभाने के बाद क्रिकेट के इस प्रारूप में अपने करियर को अलविदा कह दिया। गंभीर ने कहा, ''उन्होंने विश्व कप जीत के साथ संन्यास लिया जो शायद किसी भी लिखी गई स्क्रिप्ट से बेहतर था। दोनों खिलाड़ी शानदार हैं। उन्होंने भारतीय क्रिकेट के लिए बहुत कुछ किया है और मैं उन्हें बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।'

एक 'वड़ा पाव' खाने वाला ठेठ मुंबइया तो दूसरा 'छोले भटूरे' का शौकीन दिल्ली वाला लेकिन फिर भी पिछले 15 साल से दोनों एक दूसरे के पूरक रहे हैं। दुख में , खुशी में, जीत में और हार में। वेस्टइंडीज में दक्षिण अफ्रीका को हराकर टी20 विश्व कप जीतने के बाद रोहित मैदान पर लेट गए,आंखें आंसुओं से भीगी थी। वहीं कोहली अपनी भावनायें छिपाते कुछ देर के लिये चुपचाप ड्रेसिंग रूम में चले गए। वह जीत का जश्न मनाना चाहते थे लेकिन अकेले भी रहना चाहते थे। दोनों के बीच साझा क्या है , एक दूसरे के हुनर और उपलब्धियों का सम्मान। रोहित को बखूबी पता था कि कोहली ने संन्यास का फैसला ले लिया है, फाइनल का नतीजा चाहे जो हो। यही वजह है कि मैच के बाद पुरस्कार वितरण में रोहित ने उन्हें वह मौका दिया और अपने संन्यास का ऐलान नहीं किया। उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस में इसकी घोषणा की। जब एक ही दौर में दो दिग्गज साथ खेल रहे हों तो मतभेद होना लाजमी है क्योंकि कहते हैं ना कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती। भारतीय क्रिकेट में इतना कुछ दांव पर होता है कि दो तलवारें एक म्यान में साथ रहना सीख जाती हैं।

सुनील गावस्कर और कपिल देव अस्सी के दशक में साथ खेल रहे थे जब सोशल मीडिया नहीं था। उस दौर में कप्तानी को लेकर म्युजिकल चेयर हुआ करता था लेकिन इन दोनों धुरंधरों का एक दूसरे के प्रति सम्मान कम नहीं हुआ। रोहित और विराट सोशल मीडिया के दौर के दिग्गज है। तिल का ताड़ बनाने वाले इस दौर में दोनों ने अपनी गरिमा बनाये रखी। विश्व कप सेमीफाइनल 2019 में भारत की हार के बाद दोनों के संबंधों में दरार की खबरें आने लगी। कोहली ने टी20 कप्तानी छोड़ने का फैसला किया और बीसीसीआई ने सीमित ओवरों के दोनों प्रारूपों में रोहित को कप्तान बनाया।

सोशल मीडिया पर वायरल हुई कुछ पोस्ट में पता चलता है कि दोनों के मन में एक दूसरे के लिये कितना सम्मान है। कोहली ने कुछ साल पहले 'ब्रेकफास्ट विद चैम्पियन' पॉडकास्ट में कहा था ,''जब वह सबसे पहले आया तो सब बोलते थे कि एक प्लेयर आया है रोहित शर्मा। मैने सोचा कि युवा खिलाड़ी तो हम भी हैं, ऐसा कौन सा प्लेयर आया है कि कोई हमारी बात ही नहीं कर रहा। फिर टी20 विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मैने उसकी पारी देखी तो मैं सोफे में धंस गया। मैने खुद से कहा कि भाई आज के बाद चुप रहना।''

इसी तरह रोहित ने कहा ,'' विराट हमेशा से चैम्पियन क्रिकेटर रहा है। हम सभी को पता है कि उसने हमारे लिये क्या किया है।'' दोनों के अपने अपने संघर्ष रहे हैं। कोहली को दिल्ली क्रिकेट के भ्रष्ट माहौल में खुद को साबित करना था जिसमें उनके दिवंगत पिता ने अंडर 15 चयन के लिये रिश्वत देने से इनकार कर दिया था। वहीं रोहित के अंकल ने बोरिवली में स्वामी विवेकानंद स्कूल के अधिकारियों से कहा कि वह 200 रूपये महीना फीस नहीं दे पायेंगे। उसे खेल में स्कॉलरशिप मिली।

विश्व कप 1983 में लार्डर्स की बालकनी पर जिस तरह कपिल का हाथ थामे गावस्कर की तस्वीर क्रिकेटप्रेमियों के जेहन में चस्पां है , उसी तरह टी20 विश्व कप जीतने के बाद रोहित और कोहली का एक दूसरे को गले लगाना भी लोग भूल नहीं पायेंगे। भारतीय क्रिकेट के इस जय और वीरू की तस्वीरें निश्चित तौर पर क्रिकेटप्रेमियों की पलकों की कोर भिगो देगी। वैसे भी लीजैंड कभी रिटायर नहीं होते।

अब रविंद्र जडेजा ने किया टी-20 से संन्यास का ऐलान

नयी दिल्ली,30 जून 2024। भारतीय टीम के टी-20 विश्वकप में जीत दर्ज करने के बाद, फैंस के लिए लगातार एक के बाद एक दिल टूटने वाली खबरें आ रही हैं. कैप्टन रोहित शर्मा, किंग कोहली के बाद अब जड्डू रवींद्र जडेजा ने भी इंटरनेशनल टी-20 क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। रवींद्र जडेजा ने खुद एक इंस्टाग्राम पोस्ट में इसकी जानकारी दी है। जडेजा ने टी 20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 10 फरवरी 2009 को डेब्यू किया था। उन्होंने पहला मुकाबला श्रीलंका के खिलाफ कोलंबो में खेला था। डेब्यू टी20 में जडेजा ने 4 ओवर में 29 रन देकर कोई विकेट नहीं लिया था। जबकि बल्ले से 7 गेंदों पर 5 रन बनाए थे।

जडेजा ने आखिरी मैच टी 20 वर्ल्ड कप 2024 का फाइनल खेला। इस मुकाबले में जडेजा ने बल्ले से 2 रन बनाए। जबकि गेंदबाजी में भी 12 रन देकर कोई विकेट नहीं ले सके। यानी उनका डेब्यू और आखिरी मैच लगभग एकजैसा ही रहा है. रविंद्र जडेजा के फॉर्म की बात करें तो 6 टी-20 विश्व कप खेल लेने का अच्छा अनुभव होने के बावजूद जडेजा टी-20 वर्ल्ड कप में कोई जादू नहीं चला पाए हैं। रविंद्र जडेजा ने टी20 वर्ल्ड कप में अभी तक 11 पारियों में बैटिंग की है. इसमें उन्होंने करीब 13 की औसत और 98 की स्ट्राइक रेट से 102 रन बनाए हैं। जडेजा की सबसे बड़ी पारी 26 रनों की रही थी। जडेजा ने इन 11 पारियों में सिर्फ एक छक्का ही जड़ा। इस टी20 वर्ल्ड कप की दो पारी में उनके 7 रन हैं। पाकिस्तान के खिलाफ मैच में मोहम्मद आमिर के खिलाफ जडेजा पहली ही गेंद पर आउट हो गए थे।

बात करें गेंद बाजी की तो जडेजा इस 22 गज की पट्टी पर अपनी बॉलिंग से भी कोई जलवा नहीं दिखा पाए हैं। 26 टी20 वर्ल्ड कप में उनके 22 विकेट हैं। इसमें 6 विकेट तो स्कॉटलैंड और नामीबिया के खिलाफ है। वह 26 रन देकर एक विकेट ले पाते हैं और एक विकेट लेने में उन्हें 21 गेंदें लगती हैं। आईपीएल में तो उनका गेंद और बल्ला दोनों ही काफी चला है, लेकिन भारत के लिए टी20 वर्ल्ड कप में उन्होंने न बल्ले से और न ही बॉल से कोई भी करामात नहीं दिखाई है।

मालविका बंसोड़ ने किया सेमीफाइनल में प्रवेश

नयी दिल्ली,30 जून 2024। भारत की मालविका बंसोड़ ने स्कॉटलैंड की क्रिस्टी गिलमोर को तीन गेम के रोमांचक मैच में हराकर फोर्ट वर्थ में यूएस ओपन सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट के महिला एकल सेमीफाइनल में प्रवेश किया। (अधिक ब ै ड मि ं ट न समाचार)नागपुर की 22 वर्षीय खिलाड़ी, जो 49 वें स्थान पर है, ने 2014 राष्ट्रमंडल खेलों की रजत पदक विजेता क्रिस्टी पर 10-21 21-15 21-10 से जीत दर्ज की। मालविका ने क्रिस्टी को 2022 में हाइलो ओपन में हराया था, जब स्कॉट शटलर चोट के कारण दूसरे गेम में रिटायर हो गई थी। भारतीय खिलाड़ी क्रिस्टी से पहले दो बार हार चुकी है।पुरुष एकल में प्रियांशु राजावत ने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन चौथी वरीयता प्राप्त चीन के लेई लान शी से आगे नहीं बढ़ सके और क्वार्टर फाइनल मैच में 21-15, 11-21, 18-21 से हार गए। यह मैच एक घंटे से भी कम समय तक चला।दूसरी वरीयता प्राप्त ट्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी को छठी वरीयता प्राप्त जापानी जोड़ी रुई हिरोकामी और युना काटो से 17-21, 21-17, 19-21 से हार का सामना करना पड़ा और उनका अभियान भी अंतिम आठ में समाप्त हो गया।

मधुबाला की आई हमशक्ल तो फेल हो गई माधुरी-करिश्मा

लोग बोले- ब्यूटी क्वीन लौट आई

मधुबाला की ये हमशक्ल लड़की इतनी ओरिजिनल है कि इसने करिश्मा कपूर, माधुरी दीक्षित की हमशक्ल को कोसों पीछे छोड़ दिया है। इस लड़की को देखने के बाद लोग इन्हें मधुबाला ही समझ बैठे हैं।

मधुबाला का नाम सुनते ही नजरों के आगे एक ऐसी शोख हसीना का चेहरा आ जाता है, जिसकी मुस्कान ही दिलों में घर कर जाती है. बड़ी बड़ी आंखे...जिसमें हर जज्बात समाया नजर आता है. कंधे पर झूलती जुल्फें काली घटाओं का अहसास करवाती हैं। मधुबाला मुस्कुरा कर नजरें क्या उठाती थीं, ऐसा लगता था कि हर दर्द को फना कर गई हैं। उनकी इसी अदा के चलते उन्हें बॉलीवुड की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेस माना जाता था। बॉलीवुड अब तक उनके जैसी खूबसूरत एक्ट्रेस के इंतजार में है और लगता है कि ये इंतजार एक एक्ट्रेस पर जाकर खत्म हो सकता है। ये एक्ट्रेस ऐसी हैं, जो काफी हद तक मधुबाला जैसी ही दिखाई देती हैं। मधुबाला की हमशक्ल ये एक्ट्रेस हैं प्रियंका कंडवाल, जिनकी स्माइल देखकर आपको बरबस ही मधुबाला की याद आ जाएगी। वैसा ही लंबा चेहरा,होंठ और आंखें। जरा सी अदाएं भी मधुबाला जैसी सीखकर प्रियंका कंडवाल अपने वीडियोज के जरिए मधुबाला की यादें ताजा कर देती हैं। मधुबाला के पुराने गानों पर रील्स बनाते समय वो उनके हावभाव और बॉडी लेंग्वेज को पकड़ कर चलने की भी पूरी कोशिश करती हैं। कभी साड़ी में, कभी सूट में मधुबाला की तरह हेयरस्टाइल रख कर वो अक्सर उनके गानों पर या डायलॉग पर वीडियो बनाती हैं।

अपनी खूबसूरती के चलते मधुबाला की हमशक्ल प्रियंका कंडवाल टीवी सीरियल्स में अपने लिए जगह बना चुकी हैं. वो पवित्र रिश्ता, जाना न दिल से दूर में दिख चुकी हैं. मरियम खान- लाइव रिपोर्टिंग नाम के शो में मेन रोल में दिखाई दे चुकी हैं. साउथ की कुछ फिल्मों में भी प्रियंका कंडवाल नजर आई हैं। उनकी रील्स और वीडियोज को देखकर अक्सर फैन्स उन्हें मधुबाला के नाम से ही पुकारते हैं। उनके वीडियो पर कुछ फैन्स मधुबाला रिटर्न लिख कर भी कमेंट कर चुके हैं। वहीं कुछ मधुबाला की हमशक्ल प्रियंका कंडवाल के वीडियो देख कह रहे हैं कि ये ब्यूटी क्वीन का दूसरा जन्म है।

हिट की गारंटी नहीं है विवाद, कंटेंट में दम तो तभी चलेगी फिल्म

बीते हफ्ते बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुई बहुचर्चित फिल्मों हमारे बारह और जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी को दर्शकों ने सिरे से खारिज कर दिया। यही वजह है कि काफी विवादों के बीच रिलीज हुई इन फिल्मों की बॉक्स ऑफिस पर कमाई पहले दिन ही लाखों में सिमट गई। फिल्म हमारे बारह की रिलीज पर कुछ संगठनों द्वारा आपत्ति जताई गई थी। इसके बाद कोर्ट द्वारा इसकी रिलीज पर रोक लगा दी गई थी। बाद में फिल्म में कुछ विवादित कंटेंट हटाए जाने के बाद इसे रिलीज करने की अनुमति मिली। वहीं, जहांगीर नैशनल यूनिवर्सिटी को अप्रैल के महीने में रिलीज किया जाना था। लेकिन लोकसभा चुनाव के चलते इस फिल्म को सेंसर बोर्ड से मंजूरी नहीं मिल पाई। इसलिए इसे अब चुनाव के बाद रिलीज किया गया है।

फिल्मी दुनिया के जानकारों की अगर मानें, तो अभी तक किसी फिल्म के विवादित होने को उसके हिट होने की गारंटी माना जाता था। मसलन, विवेक अग्निहोत्री की द कश्मीर फाइल्स और सुदीप्तो सेन की द केरल स्टोरीजबरदस्त विवादों में रहीं, लेकिन दोनों ही डायरेक्टर की अगली फिल्मों द वैक्सीन वॉर और बस्तर ~ द नक्सल स्टोरी को पब्लिक से कोई खास रिस्पॉन्स नहीं मिला।

विवादित होने से ज्यादा कंटेंट में दम जरूरी

जानकारों का कहना है कि आम जनता के लिए फिल्म के विवादित होने से ज्यादा उसका कंटेंट महत्वपूर्ण होता है। अगर कोई फिल्म विवादों में आती है, तो उसे लेकर लोगों में चर्चा भी होती है। लेकिन अगर उसके कंटेंट में दम नहीं है, तो उसका चलना मुश्किल है। द कश्मीर फाइल्स और द केरल स्टोरी विवादों में रहीं, लेकिन उन्हें पब्लिक ने उनके कंटेंट के कारण पसंद किया। इनकी रिलीज के बाद विवादित फिल्मों की रिलीज का सिलसिला लगातार जारी है, लेकिन दर्शकों ने कमजोर कंटेंट के कारण किसी और फिल्म को पसंद नहीं किया।

आने वाली हैं और फिल्में, जिन पर हुए विवाद या फिर हो सकते हैं

हालांकि, आने वाले दिनों में भी तमाम ऐसी फिल्मों की रिलीज का सिलसिला जारी रहने वाला है, जिनको लेकर पहले ही विवाद हो चुके हैं या फिर विवाद होने की संभावना है। मसलन, जुलाई में दो फिल्में यूपी फाइल्स और एक्सिडेंट या साजिश गोधरा रिलीज होंगी। फिल्म यूपी फाइल्स उत्तर प्रदेश की राजनीति पर आधारित है। वहीं एक्सिडेंट या साजिश गोधरा करीब दो दशक पहले गोधरा में हुई ट्रेन दुर्घटना पर आधारित है।

लिलिपुट खुद को अमिताभ बच्चन के लिए समझने लगे थे मनहूस

लिलिपुट के नाम से मशहूर एक्टर एमएम फारुकी पिछले चार दशक से फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा हैं, और करियर में खूब उतार-चढ़ाव देखे। लिलिपुट ने मेगास्टार अमिताभ बच्चन के साथ फिल्मों में काम करने की काफी कोशिश की, पर हर बार फेल हो गए। आखिरकार फिल्म बंटी और बबली में लिलिपुट ने अमिताभ बच्चन के साथ काम किया। इस वजह से लिलिपुट खुद को मनहूस समझने लगे थे।

ऐसे मिली थी अमिताभ संग पहली फिल्म, पर नहीं बन पाई

लिलिपुट ने बताया, मैं ताश खेल रहा था, जब मुझे सुभाष घई का फोन आया। उन्होंने मुझसे उनके ऑफिस में मिलने के लिए कहा। मेरे पास बांद्रा जाने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए जिन लोगों के साथ मैं ताश खेल रहा था, उनमें से एक मुझे वहां ले गया। सुभाष जी ने मुझसे कहा कि मैं एक फिल्म बना रहा हूं शेरबहादुर, और उसमें अमिताभ बच्चन हीरो होंगे और तुम विलेन।

अमिताभ की फिल्म के लिए छोड़ दीं पहले साइन कीं फिल्में

लिलिपुट ने आगे बताया कि उस वक्त वह शागिर्द, अमीर आदमी और शरारत जैसी फिल्में कर रहे थे। इनके अलावा उन्होंने कुछ और फिल्में भी साइन की हुई थीं। लेकिन सुभाष घई ने लिलिपुट से उन फिल्मों को छोड़ने के लिए कहा ताकि शेरबहादुर से पहले उनकी कोई ऑनस्क्रीन इमेज न बने। लिलिपुट बोले, मेरी क्या औकात थी? मैं उन लोगों से फिल्म रिलीज न करने के लिए कैसे कहता, जिन्होंने शूट की थी? जूता ढिलाएगा क्या? मैंने शेरबहादुर के लिए वो सभी फिल्में छोड़ दीं, जो मैंने साइन की हुई थीं। लेकिन शेरबहादुर बंद हो गई और मेरे पास कोई काम नहीं बचा। अमित जी की सेहत ठीक नहीं थी और फिल्म नहीं बनी।

लिलिपुट फिर एक और फिल्म आशियाना में अमिताभ बच्चन संग काम करने वाले थे, लेकिन वह फिल्म भी किसी वजह से कभी बन नहीं पाई। इससे लिलिपुट खुद को भ्रमित महसूस करने लगे और उन्होंने अमिताभ बच्चन से कह दिया कि मेरे साथ एक्टिंग करने की कोशिश मत करना। लेकिन कई साल बाद डायरेक्टर शाद अली ने उन्हें फिल्म बंटी और बबली के लिए अप्रोच किया, और बताया कि फिल्म में अमिताभ बच्चन भी हैं। यह जानकर लिलिपुट ने शाद अली से कहा, मैं मनहूस हूं। अमित जी के साथ मेरी फिल्म बनती नहीं है और तुम्हारी भी फिल्म नहीं बनेगी।% लेकिन शाद अली ने एक्टर से कहा कि वह ऐसे अंधविश्वास में विश्वास नहीं करते और फिल्म बनाई। फिल्म सुपरहिट हुई और बंपर कमाई की। लेकिन लिलिपुट को इसी बात का मलाल रहा कि अपनी जवानी के दिनों में वह अमिताभ बच्चन के साथ काम नहीं कर पाए। वरना आज करियर में वह किसी और मुकाम पर होते। फिर बात खत्म करते हुए बोले- अब कहां, अब तो हम दोनों बुड्ढे हो गए हैं।

मेरे कपड़े फटे और गंदे थे, तभी आमिर सामने आ गए

नवाजुद्दीन सिद्दीकी आज बॉलीवुड के बेहतरीन और टॉप एक्टर्स में शुमार किए जाते हैं और उन्हें अच्छी फीस भी मिलती है, लेकिन कभी उन्होंने फिल्मों में बिना किसी क्रेडिट के काम किया था। यहां तक उन्हें रोजाना सिर्फ एक हजार रुपये की तनख्वाह मिलती थी। नवाजुद्दीन सिद्दीकी इस वक्त नई फिल्म रौतू का राज को लेकर चर्चा में हैं, और उन्होंने लेटेस्ट इंटरव्यू में अपने करियर की शुरुआती फीस से लेकर सरफरोश में आमिर संग काम करने का एक्सपीरियंस शेयर किया। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने यह भी बताया कि सरफरोश में जो उनका सीन था, उसमें वह असल में आमिर के सामने हकला रहे थे और बहुत डरे हुए थे। चूंकि उनका किरदार भी ऐसा ही था, इसलिए लोगों को लगा कि नवाजुद्दीन अच्छी एक्टिंग कर रहे हैं।नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने बॉलीवुड बबल से बातचीत में बताया कि उन्हें सरफरोश में काम कैसे मिला था। वह बोले, मुझे सरफरोश में रोल मिला। उन्होंने मुझसे कहा कि प्लीज फिल्मिस्तान आइए। मैं संयोगवश फिल्म सिटी पहुंच गया। लेकिन बाद में जब सही जगह पहुंचा तो नहीं पता था किआमिर खान के साथ एक्टिंग करूंगा।

खुला पत्र

क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ,क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

» क्या छत्तीसगढ़ के भाजपा सरकार में भी भ्रष्टाचारी नेता हैं पाक साफ?

» विधायक मंत्री पाक साफ क्योंकि वह भाजपा के पुरानी कांग्रेस सरकार के राह पर ही चलती दिख रही?

वर्तमान भाजपा की नई सरकार व उनके विधायक व मंत्री 6 महीने के कार्यकाल कुछ इसी प्रकार देखने को मिला, स्वास्थ्य विभाग के मामले में तो पिछले 6 महीने में पुराने भ्रष्टाचारों की एक भी जांच नहीं हुई, यहां तक जांच करने का प्रयास भी नहीं किया गया जबकि मंत्री भी सारे भ्रष्टाचारों से अवगत है फिर भी न जाने किसके लिए हुआ है चुप है

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

कलम बंद...

कलम बंद...

आपके पड़ोसी जिले के स्वास्थ्य महकमें में जारी है आपसी रंजिश स्वास्थ्य मंत्री जी

संविदा डीपीएम की कार्रवाई भी चर्चा का विषय,पूरा स्वास्थ्य विभाग है परेशान

खुद को स्वास्थ्य मंत्री का रिश्तेदार बताकर महकमे को दबाने की कोशिश

घटती घटना | अम्बिकापुर,शुक्रवार 08 मार्च 2024 | 5

आखिर क्यों वर्ष 2022 में जिला चिकित्सालय के सिविल सर्जन ने डॉक्टर प्रिंस जायसवाल के जिला चिकित्सालय में अनावश्यक प्रवेश पर लगाया था प्रतिबंध?

» क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी?

» क्यां छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी?

» देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?

» क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?

» क्या भाजपा के भ्रष्टाचारी नेता इसलिए हैं पाक-साफ क्योंकि वह हैं भाजपा के पदाधिकारी?

घटती घटना | अम्बिकापुर,शनिवार 10 फरवरी 2024 | 5

क्या कोरिया जिले का स्वास्थ्य विभाग भ्रष्टाचार में इतिहास रचने जा रहा है?

सेवा भावना की मिसाल पेश कर रहे बैकुंठपुर के एक डॉक्टर को उच्च न्यायालय से मिली फटकार

प्रभारी डीपीएम स्वास्थ्य विभाग जिला कोरिया पर क्यों मेहरबान है भाजपा सरकार?

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साईं ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)